अध्याय 5: नहीं होना बीमार

विषय-सूची 11 प्रश्नावली · 28 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1	मेरी समझ से (MCQ)	4 प्रश्न
प्रश्नावली 5.2	मिलकर करें मिलान (शब्दार्थ)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 5.3	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 5.4	सोच-विचार के लिए	5 प्रश्न
प्रश्नावली 5.5	अनुमान और कल्पना से	5 प्रश्न
प्रश्नावली 5.6	कहानी की रचना — उदाहरण खोजिए	1 प्रश्न
प्रश्नावली 5.7	समस्या और समाधान	2 प्रश्न
प्रश्नावली 5.8	शब्द से जुड़े शब्द	1 प्रश्न
प्रश्नावली 5.9	खोजबीन — वाक्य ढूँढिए	4 प्रश्न
प्रश्नावली 5.10	चेहरों पर मुस्कान, मुँह में पानी	2 प्रश्न
प्रश्नावली 5.11	लेखन के अनोखे तरीके	1 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1 — मेरी समझ से (MCQ)

प्रश्न 1

बच्चे के विद्यालय न जाने का मुख्य कारण क्या था? (क) उसका विद्यालय जाने का मन नहीं था। (ख) उसका साबूदाने की खीर खाने का मन था। (ग) उसने गृहकार्य नहीं किया था। (घ) उसे बुखार हो गया था।

हल

कहानी में बच्चे ने सोचा — 'मैंने होमवर्क भी नहीं किया था। स्कूल जाता तो जरूर सजा मिलती।'
इससे स्पष्ट है कि बच्चे का स्कूल न जाने का मुख्य कारण होमवर्क (गृहकार्य) न करना था।
साथ ही उसका स्कूल जाने का मन भी नहीं था — इसलिए (क) और (ग) दोनों सही हैं।
उसे वास्तव में बुखार नहीं था — यह बहाना था।

उत्तर: (क) उसका विद्यालय जाने का मन नहीं था। और (ग) उसने गृहकार्य नहीं किया था।

प्रश्न 2

कहानी के अंत में बच्चे ने कहा, 'इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए मैंने बीमारी का बहाना कभी नहीं बनाया।' बच्चे ने यह निर्णय लिया क्योंकि— (क) घर में रहने के बजाय विद्यालय जाना अधिक रोचक है। (ख) बीमारी का बहाना बनाने से साबूदाने की खीर नहीं मिलती। (ग) झूठ बोलने से झूठ के खुलने का डर हमेशा बना रहता है। (घ) इस बहाने के कारण उसे दिनभर अकेले और भूखे रहना पड़ा।

हल

बच्चे को पूरा दिन भूखे पेट रहना पड़ा — खाना नहीं मिला, बाहर नहीं जा सका, पीठ दुखती रही, खेल नहीं पाया।
उसने खुद सोचा — 'इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता।'
कहानी के अंत में 'सारे विकार निकल गए' — यह व्यंग्य है जो बताता है कि बहाने का परिणाम भूखे-उबाऊ दिन के रूप में मिला।
इसलिए (घ) सबसे सटीक उत्तर है।

उत्तर: (घ) इस बहाने के कारण उसे दिनभर अकेले और भूखे रहना पड़ा।

प्रश्न 3

'लेटे-लेटे पीठ दुखने लगी' इस बात से बच्चे के बारे में क्या पता चलता है? (क) उसे बिस्तर पर लेटे रहने के कारण ऊब हो गई थी। (ख) उसे अपनी बीमारी की कोई चिंता नहीं रह गई थी। (ग) वह बिस्तर पर आराम करने का आनंद ले रहा था। (घ) बीमारी के कारण उसकी पीठ में दर्द हो रहा था।

हल

बच्चे को वास्तव में कोई बीमारी नहीं थी — पीठ दुखना इसलिए हुआ क्योंकि वह मजबूरी में लेटे-लेटे ऊब रहा था।
इससे पता चलता है कि उसे बिस्तर पर लेटे रहना बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था और वह ऊब गया था।
उसने उठकर बैठने की कोशिश भी की — 'उठकर बैठ गया। लेकिन बाहर कुछ आहट होते ही फिर से लेट गया।'

उत्तर: (क) उसे बिस्तर पर लेटे रहने के कारण ऊब हो गई थी।

प्रश्न 4

'क्या ठाठ हैं बीमारों के भी!' बच्चे के मन में यह बात आई क्योंकि— (क) बीमार व्यक्ति को बहुत आराम करने को मिलता है। (ख) बीमार व्यक्ति को अच्छे खाने का आनंद मिलता है। (ग) बीमार व्यक्ति को विद्यालय नहीं जाना पड़ता है। (घ) बीमार व्यक्ति अस्पताल में शांति से लेटा रहता है।

हल

बच्चे ने देखा कि सुधाकर काका साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे हुए हैं और नानीजी उन्हें चम्मच से साबूदाने की खीर खिला रही हैं।
काका ने 'बहुत स्वाद लेकर खीर खाई' — यह देखकर बच्चे को लगा कि बीमारों को आराम और अच्छा खाना दोनों मिलते हैं।
इसलिए (क) और (ख) दोनों सही हैं — आराम मिलता है और अच्छा खाना भी मिलता है।

उत्तर: (क) बीमार व्यक्ति को बहुत आराम करने को मिलता है। और (ख) बीमार व्यक्ति को अच्छे खाने का आनंद मिलता है।

प्रश्नावली 5.2 — मिलकर करें मिलान (शब्दार्थ)

प्रश्न 1

पाठ में से चुनकर दिए गए शब्दों को उनके सही अर्थों से मिलाइए: शब्द: 1. साबूदाना 2. वार्ड 3. नर्स 4. रजाई 5. थर्मामीटर 6. काढ़ा 7. ड्राइक्लीनर 8. ताजमहल 9. अरहर अर्थ: 1. किसी विशिष्ट कार्य के लिए घेरकर बनाया हुआ स्थान। 2. एक प्रकार का जाड़े का ओढ़ना जिसका कपड़ा दोहरा होता है और जिसमें रुई भरी होती है। 3. शरीर का तापमान (जैसे बुखार) नापने का एक छोटा यंत्र। 4. कई तरह की जड़ी-बूटियों और औषधियों को उबालकर उनके रस से बना पेय होता है। इसे सर्दी-जुकाम, खाँसी-बुखार और पाचन से जुड़ी समस्याओं में लाभदायक माना जाता है। 5. रेशमी, ऊनी, मलमल जैसे नाजुक कपड़ों को पानी, साबुन और डिटर्जेंट के बिना मशीनों से साफ करने वाला व्यक्ति। 6. उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित 17वीं सदी में निर्मित एक विश्व-प्रसिद्ध स्मारक जो सफेद संगमरमर से बना है। 7. एक दाल जिसे तुअर भी कहते हैं। 8. सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा, सागूदाना, यह पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। 9. वह व्यक्ति जो रोगियों, घायलों या वृद्धों आदि की देखभाल करे।

हल

1. साबूदाना → अर्थ 8: सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा, सागूदाना, यह पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है।
2. वार्ड → अर्थ 1: किसी विशिष्ट कार्य के लिए घेरकर बनाया हुआ स्थान।
3. नर्स → अर्थ 9: वह व्यक्ति जो रोगियों, घायलों या वृद्धों आदि की देखभाल करे।
4. रजाई → अर्थ 2: एक प्रकार का जाड़े का ओढ़ना जिसका कपड़ा दोहरा होता है और जिसमें रुई भरी होती है।
5. थर्मामीटर → अर्थ 3: शरीर का तापमान (जैसे बुखार) नापने का एक छोटा यंत्र।
6. काढ़ा → अर्थ 4: कई तरह की जड़ी-बूटियों और औषधियों को उबालकर उनके रस से बना पेय।
7. ड्राइक्लीनर → अर्थ 5: रेशमी, ऊनी, मलमल जैसे नाजुक कपड़ों को पानी, साबुन और डिटर्जेंट के बिना मशीनों से साफ करने वाला व्यक्ति।
8. ताजमहल → अर्थ 6: उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित 17वीं सदी में निर्मित एक विश्व-प्रसिद्ध स्मारक जो सफेद संगमरमर से बना है।
9. अरहर → अर्थ 7: एक दाल जिसे तुअर भी कहते हैं।

उत्तर: साबूदाना-8, वार्ड-1, नर्स-9, रजाई-2, थर्मामीटर-3, काढ़ा-4, ड्राइक्लीनर-5, ताजमहल-6, अरहर-7

प्रश्नावली 5.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

पाठ की इस पंक्ति का अर्थ लिखिए: 'मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिलकुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।'

हल

इस पंक्ति में बच्चे की मनोदशा का बहुत मजेदार चित्रण है।
बच्चे ने होमवर्क नहीं किया था और स्कूल जाने का मन भी नहीं था — दोनों कारणों से वह बचना चाहता था।
वह जान-बूझकर बीमार पड़ने का निर्णय करता है — मानो बीमारी उसके अपने हाथ में हो।
'चलो बीमार पड़ जाते हैं' — यह वाक्य हास्यपूर्ण है क्योंकि बीमारी कोई अपनी मर्जी से नहीं होती, लेकिन बच्चा ऐसे सोचता है जैसे यह उसका अपना निर्णय हो।
यह पंक्ति बच्चे की चालाकी और बचकानी सोच दोनों को एक साथ दर्शाती है।

उत्तर: बच्चा स्कूल से बचने के लिए जान-बूझकर बीमार होने का नाटक करने का निर्णय करता है — यह उसकी मासूम चालाकी और हास्यपूर्ण सोच को दर्शाता है।

प्रश्न 2

पाठ की इस पंक्ति का अर्थ लिखिए: 'देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता। लेकिन नहीं! भूखे रहो!! इससे सारे विकार निकल जाएंगे। विकार निकल जाएं बस। चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ।'

हल

यह पंक्ति भूखे बच्चे के मन की कुंठा और खीझ को बड़े रोचक ढंग से व्यक्त करती है।
'कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता' — इसका अर्थ है कि वह कोई असंभव या बड़ी चीज़ नहीं माँग रहा था, बस साबूदाने की खीर ही चाहता था।
'भूखे रहो!! इससे सारे विकार निकल जाएंगे' — यह नानाजी के उस विचार पर व्यंग्य है जो उन्होंने कहा था कि बीमारी में भूखे रहने से विकार निकलते हैं।
'विकार निकल जाएं बस, चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ' — इसमें बच्चे की झुंझलाहट है कि इस 'विकार निकालने' के चक्कर में वह खुद तकलीफ में है।
इस पंक्ति में बच्चे का गुस्सा, भूख की बेचैनी और व्यंग्य एक साथ झलकते हैं।

उत्तर: इस पंक्ति में बच्चे की भूख, खीझ और व्यंग्य एक साथ व्यक्त होते हैं — वह केवल खीर चाहता था, जो मिली नहीं; 'भूखे रहने से विकार निकलते हैं' वाले उपाय पर वह खीझ जाता है।

प्रश्नावली 5.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

अस्पताल में बच्चे को कौन-कौन सी चीजें अच्छी लगीं और क्यों?

हल

कहानी में बच्चे को अस्पताल में निम्नलिखित चीजें अच्छी लगीं:

1. बड़ा-सा साफ वार्ड — एक बड़े से वार्ड में कई एक जैसे पलंग लाइन से लगे हुए थे, सब पर एक जैसी सफेद चादर और लाल कंबल — यह व्यवस्था और साफ-सुथरापन उसे अच्छा लगा।
2. हरे-भरे पेड़ — 'बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे' — यह दृश्य सुंदर और शांत लगा।
3. न ट्रैफिक का शोरगुल, न धूल, न मच्छर-मक्खी — शहर के शोर-शराबे के विपरीत अस्पताल का शांत वातावरण उसे पसंद आया।
4. लोगों की धीमी-धीमी गुनगुन — केवल धीरे-धीरे बातचीत की आवाज और बाकी एकदम शांति — इस सुकून भरे माहौल ने उसे प्रभावित किया।
5. सुधाकर काका का सेवा-सत्कार — उनके सिरहाने खड़े होकर नानीजी का ध्यान रखना, साबूदाने की खीर खिलाना — यह देखकर बच्चे को भी बीमार होने की इच्छा हुई।

उत्तर: अस्पताल में बच्चे को साफ-सुथरा वातावरण, हरे-भरे पेड़, शांति, धूल-शोर का अभाव और मरीज़ की देखभाल (साबूदाने की खीर) — ये सब चीजें अच्छी लगीं।

प्रश्न 2

कहानी के अंत में बच्चे को महसूस हुआ कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। क्या आपको लगता है कि उसका निर्णय सही था? क्यों?

हल

हाँ, बच्चे का यह अहसास बिल्कुल सही था।

कारण 1: उसे पूरा दिन भूखे रहना पड़ा — न खाना मिला, न फल, न खीर।

कारण 2: कड़वी पुड़िया खानी पड़ी और काढ़े जैसी चाय पीनी पड़ी।

कारण 3: पीठ दुखी, ऊब हुई, लेटे-लेटे दिन काटना मुश्किल हो गया।

कारण 4: मुन्नू स्कूल से आकर आम खा रहा था — यह देखकर ईर्ष्या हुई।

कारण 5: होमवर्क की कॉपी किससे माँगें — यह चिंता भी थी।

यदि स्कूल जाता तो: दोस्तों के साथ होता, रिसेस में नमक-मिर्च वाले अमरूद खाता, खाना भी मिलता।

बहाने का परिणाम हानिकारक निकला — इसीलिए उसने आगे कभी ऐसा बहाना नहीं बनाया।

उत्तर: हाँ, बच्चे का निर्णय सही था क्योंकि बहाने के कारण उसे भूखे रहना पड़ा, कड़वी दवा मिली, और दोस्तों के साथ का मजा छूट गया — इससे उसे सीख मिली।

प्रश्न 3

जब बच्चा बीमार पड़ने का बहाना बनाकर बिस्तर पर लेटा रहा तो उसके मन में कौन-कौन से भाव आ रहे थे?

हल

बच्चे के मन में एक के बाद एक कई भाव आए:

1. आरंभ में संतुष्टि — स्कूल से बचने की चालाकी सफल होती देख वह मन में खुश था।
2. जिज्ञासा और कल्पना — रजाई में लेटे-लेटे वह घर में चल रही गतिविधियों का अनुमान लगाता रहा।
3. ऊब और बेचैनी — जब सब चले गए और वह अकेला रह गया तो उसे गली की चहल-पहल देखने की तेज इच्छा हुई, पर मजबूरी थी।
4. भूख की तड़प — खाने की खुशबू आई, दाल-चावल, हरी मिर्च — पर खाना नहीं मिला।
5. ईर्ष्या — मुन्नू को आम चूसते देखकर जलन और कुढ़न हुई।
6. पछतावा — 'इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता' — यह पछतावे का भाव आया।
7. क्रोध और निराशा — नानाजी द्वारा खाना न देने पर खीझ और गुस्सा भी आया।

उत्तर: बच्चे के मन में क्रमशः संतुष्टि → कल्पना → ऊब → भूख की तड़प → ईर्ष्या → क्रोध → पछतावा — ये सभी भाव आए।

प्रश्न 4

कहानी में बच्चे ने सोचा था कि 'ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो।' आपको क्या लगता है, असल में बीमार हो जाने और इस बच्चे की सोच में कौन-कौन सी समानताएं और अंतर होंगे?

हल

समानताएं:

- असली बीमार भी बिस्तर पर लेटता है और बच्चे ने भी यही किया।
- असली बीमार को भी हल्का खाना (जैसे खीर) दिया जाता है — बच्चे की कल्पना में यही था।
- दोनों ही स्थितियों में देखभाल और ध्यान मिलता है।

अंतर:

- असली बीमारी में शरीर में दर्द, कमजोरी, बेचैनी होती है — बच्चे की कल्पना में यह नहीं था।
- असली बीमार को खाने की इच्छा कम होती है — बच्चे को तो तेज भूख लग रही थी।
- असली बीमारी में दवाएं कड़वी लगती हैं और मरीज सचमुच कमजोर होता है।
- बच्चे की कल्पना में ठाठ था — पर वास्तव में उसे कड़वी पुड़िया और काढ़ा मिला, खीर नहीं।
- बच्चे की कल्पना और वास्तविकता में बड़ा अंतर निकला।

उत्तर: समानता — बिस्तर पर रहना, देखभाल मिलना; अंतर — असली बीमार को दर्द होता है और भूख नहीं लगती, जबकि बच्चे को तेज भूख थी पर खाना नहीं मिला; उसकी 'ठाठ' वाली कल्पना सच नहीं निकली।

प्रश्न 5

नानीजी और नानाजी ने बच्चे की बीमारी की दवा दी और उसे आराम करने को कहा। बच्चे को खाना नहीं दिया गया। क्या आपको लगता है कि उन्होंने सही किया? आपको ऐसा क्यों लगता है?

हल

नानाजी-नानीजी ने जो किया वह एक पारंपरिक घरेलू उपाय था — बीमारी में उपवास करने से शरीर की पाचन शक्ति को आराम मिलता है।

नानाजी का कहना था — 'तबियत ढीली हो तो सबसे अच्छा उपाय है भूखे रहना। इससे सारे विकार निकल जाएंगे।' — यह एक पुरानी धारणा है।

वे बच्चे की बीमारी को असली मान रहे थे, इसलिए उसे दवा और आराम दिया।

हालाँकि यह दृष्टिकोण आंशिक रूप से सही है — हल्की बीमारी में हल्का भोजन अच्छा होता है — पर पूरे दिन भूखा रखना उचित नहीं।

आधुनिक चिकित्सा के अनुसार, बीमारी में पौष्टिक और हल्का भोजन देना बेहतर होता है।

परंतु नानाजी-नानीजी की नीयत बच्चे की भलाई के लिए थी — उन्होंने जैसा उचित समझा वैसा किया।

उत्तर: नानाजी-नानीजी की नीयत सही थी — पर पारंपरिक 'बीमारी में भूखे रहो' का उपाय पूरी तरह उचित नहीं; हल्का पौष्टिक भोजन देना बेहतर होता।

प्रश्नावली 5.5 — अनुमान और कल्पना से

प्रश्न 1

कहानी के अंत में बच्चा नानाजी और नानीजी को सब कुछ सच-सच बताने का निर्णय कर लेता तो कहानी में आगे क्या होता?

हल

यदि बच्चा सच बताता तो संभवतः:
1. नानीजी और नानाजी पहले थोड़े नाराज होते — झूठ बोलने पर डाँट मिलती।
2. फिर शायद उसे भोजन मिल जाता — भूख की तकलीफ खत्म होती।
3. उसे होमवर्क पूरा करने की समझाइश दी जाती।
4. बच्चे का दिन अच्छा हो जाता — खाना भी, दोस्तों से बातचीत भी।
5. परंतु शायद आगे भी उसे स्कूल जाना पड़ता — दंड के रूप में।
6. इससे उसे सच बोलने का महत्त्व और जल्दी समझ आ जाता।

निष्कर्ष: सच बताने से दिन बेहतर होता — थोड़ी डाँट के बाद राहत मिलती।

उत्तर: यदि बच्चा सच बताता तो थोड़ी डाँट मिलती, परंतु भोजन मिलता और दिन बेहतर होता; उसे सच बोलने का महत्त्व जल्दी समझ आ जाता।

प्रश्न 2

कहानी में बच्चे की नानीजी के स्थान पर आप हैं। आप सारे नाटक को समझ गए हैं लेकिन चाहते हैं कि बच्चा सारी बात आपको स्वयं बता दे। अब आप क्या करेंगे?

हल

यदि मैं नानीजी की जगह होता/होती तो:
1. सबसे पहले बच्चे से बड़े प्यार से पूछता/पूछती — 'बेटा, सच-सच बताओ, क्या हुआ?'
2. उसे उसका मनपसंद खाना सामने रखकर कहता/कहती — 'देखो, अगर तुम ठीक हो तो यह खाओ।'
3. या यह कहता/कहती — 'डॉक्टर को बुलाते हैं, इंजेक्शन दिलवाएंगे' — इससे बच्चा डर कर सच बोल सकता है।
4. मुन्नू को आम लाकर सामने खिलाता/खिलाती — बच्चे से रहा न जाता और वह खुद बोल देता।
5. हँसते हुए उससे कहता/कहती — 'बेटा, नानी को सब पता है, बस तुम्हारे मुँह से सुनना है।'

इस तरह प्यार और थोड़ी चतुराई से बच्चा खुद सच बोल देता।

उत्तर: नानीजी की जगह होते हुए — प्यार से पूछना, डॉक्टर/इंजेक्शन का डर दिखाना, या आम जैसी पसंदीदा चीज़ सामने रखना — इनमें से किसी भी तरीके से बच्चे को खुद सच बोलने पर मजबूर किया जा सकता है।

प्रश्न 3

कहानी में बच्चे के स्थान पर आप हैं और घर में अकेले हैं। अब आप ऊबने से बचने के लिए क्या-क्या करेंगे?

हल

घर में अकेले होने पर ऊब से बचने के लिए मैं ये काम करता/करती:

1. कोई मनपसंद किताब या कॉमिक पढ़ना।
2. होमवर्क पूरा करना — बाद की चिंता से मुक्ति मिलती।
3. ड्रॉइंग या पेंटिंग करना।
4. घर में ही कोई खेल खेलना जैसे कागज की नाव बनाना।
5. संगीत सुनना या गुनगुनाना।
6. घर के छोटे-छोटे काम करना जिससे परिवार को खुशी हो।

इस तरह अकेले रहने का समय उपयोगी और मजेदार बनाया जा सकता है।

उत्तर: पुस्तक पढ़ना, होमवर्क करना, ड्रॉइंग करना, संगीत सुनना, घर के छोटे कामों में हाथ बँटाना — इनसे अकेलेपन की ऊब दूर की जा सकती है।

प्रश्न 4

कहानी के अंत में बच्चे को लगा कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। कल्पना कीजिए, अगर वह स्कूल जाता तो उसका दिन कैसा होता? अगले दिन जब वह स्कूल गया होगा तो उसने क्या-क्या किया होगा?

हल

अगर बच्चा उस दिन स्कूल जाता तो:

- टीचर से डाँट पड़ती (होमवर्क नहीं था) — पर यह एक बार की बात थी।
- दोस्तों के साथ समय बिताता — हँसी-मजाक, बातचीत।
- रिसेस में ठेले पर नमक-मिर्च वाले अमरूद खाता — 'कटर-कटर' जैसा मजा आता।
- दोपहर में घर आकर अच्छा खाना खाता।
- शाम को आँगन में बच्चों के साथ खेलता।

अगले दिन स्कूल जाने पर:

- पहले से होमवर्क पूरा करके गया होगा।
- दोस्तों को पिछले दिन की बात (बहाने की) बताई होगी।
- शायद पूरे दिन खुशी-खुशी स्कूल में रहा होगा क्योंकि घर में लेटे रहने की तुलना में स्कूल कहीं बेहतर लगा।

उत्तर: स्कूल जाने पर डाँट पड़ती पर दोस्त, रिसेस के अमरूद और शाम की खेल — सब मिलता; अगले दिन होमवर्क करके गया होगा और स्कूल का मजा खुलकर लिया होगा।

प्रश्न 5

कहानी में नानाजी और नानीजी ने बच्चे की बीमारी ठीक करने के लिए उसे दवाई दी और खाने के लिए कुछ नहीं दिया। अगर आप नानीजी या नानाजी की जगह होते तो क्या-क्या करते?

हल

यदि मैं नानाजी या नानीजी की जगह होता/होती तो:

1. सबसे पहले बच्चे का माथा छूकर देखता/देखती — बुखार है या नहीं।
2. यदि बुखार नहीं तो प्यार से पूछता/पूछती — 'सच बताओ, क्या हुआ?'
3. दवाई के साथ हल्का भोजन जरूर देता/देती — जैसे दलिया, खिचड़ी या थोड़ा दूध।
4. पूरे दिन भूखा नहीं रखता/रखती — पेट खाली रखने से कमजोरी आती है।
5. बच्चे को उसकी पसंद की हल्की चीज देता/देती जिससे मन भी खुश रहे।
6. शाम को थोड़ा बाहर टहलने की अनुमति देता/देती ताकि ऊब न हो।

उत्तर: दवाई के साथ हल्का पौष्टिक भोजन (दलिया/खिचड़ी/दूध) देता/देती, प्यार से सच पूछता/पूछती, और शाम को बाहर थोड़ा घूमने देता/देती।

प्रश्नावली 5.6 — कहानी की रचना — उदाहरण खोजिए

प्रश्न 1

कहानी में से निम्नलिखित के लिए उदाहरण खोजकर लिखिए: 1. बच्चे द्वारा पिछली बातों को याद किया जाना 2. हास्य यानी हँसी-मजाक का उपयोग किया जाना 3. बच्चे द्वारा सोचने के तरीके में बदलाव आना 4. कहानी में किसी का किसी बात से अनजान होना 5. बच्चे द्वारा स्वयं से बातें किया जाना

हल

1. बच्चे द्वारा पिछली बातों को याद किया जाना:
'पता नहीं क्यों साबूदाने की खीर सिर्फ उपवास और बीमारी में ही बनाई जाती है। जैसे गुझिया सिर्फ होली-दिवाली और पंजीरी सिर्फ पूर्णिमा के दिन ही बनाई जाती है।' — यहाँ बच्चा पुरानी बातें याद करता है।

2. हास्य यानी हँसी-मजाक का उपयोग:
'क्या ठाठ हैं बीमारों के भी।' — बच्चे का बीमार होने की इच्छा जताना हास्यपूर्ण है।
'चलो बीमार पड़ जाते हैं।' — बीमारी को अपनी मर्जी से अपनाना हास्य उत्पन्न करता है।

3. बच्चे द्वारा सोचने के तरीके में बदलाव आना:
पहले — 'काश! सुधाकर काका की जगह मैं होता!' (बीमार होने की इच्छा)
बाद में — 'इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता।' (बीमारी के बहाने से पछतावा)

4. कहानी में किसी का किसी बात से अनजान होना:
नानाजी और नानीजी को पता नहीं था कि बच्चा झूठमूठ बीमार है — वे उसे सच्चा बीमार समझकर दवाई देते रहे। बच्चे को नहीं पता था कि बीमारी का बहाना इतना भारी पड़ेगा।

5. बच्चे द्वारा स्वयं से बातें किया जाना:
'भूखे रहो!! इससे सारे विकार निकल जाएंगे। विकार निकल जाएं बस। चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ।' — बच्चा मन ही मन खुद से बातें करता है।

उत्तर: 1-पिछली बातें: खीर/गुझिया/पंजीरी की याद; 2-हास्य: 'चलो बीमार पड़ जाते हैं'; 3-बदलाव: 'काश बीमार होता' → 'स्कूल जाता तो ठीक था'; 4-अनजान: नानाजी-नानीजी को बहाने का पता नहीं; 5-स्वयं से बातें: 'भूखे रहो... सारे विकार निकल जाएंगे'।

प्रश्नावली 5.7 — समस्या और समाधान

प्रश्न 1

बच्चे के सामने क्या समस्या थी? उसने उस समस्या का क्या समाधान निकाला?

हल

समस्या:
बच्चे ने होमवर्क नहीं किया था और स्कूल जाने का मन नहीं था। स्कूल जाने पर सजा मिलना तय था।

समाधान:
बच्चे ने बीमार होने का बहाना बनाया — नानीजी के आने पर कहा 'मैं आज बीमार हूँ।'
उसने लक्षण भी गढ़े — 'मेरे सिर में दर्द हो रहा है। पेट भी दुख रहा है और मुझे बुखार भी है।'
रजाई से नहीं निकला ताकि कोई उसे स्कूल जाने के लिए मजबूर न कर सके।

परिणाम:
समाधान उल्टा पड़ा — दवाई और काढ़ा मिला, खाना नहीं; दिनभर ऊब में बिताना पड़ा।

उत्तर: समस्या — होमवर्क नहीं किया, स्कूल जाने पर सजा मिलती; समाधान — बीमार होने का बहाना बनाया; पर यह समाधान उल्टा पड़ा।

प्रश्न 2

नानीजी-नानाजी के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने उस समस्या का क्या समाधान निकाला?

हल

समस्या:
नानाजी और नानीजी के सामने समस्या थी कि उनका पोता बीमार है (वे बहाने को सच मान रहे थे)।
घर में थर्मामीटर भी नहीं मिला जिससे बुखार मापा जा सके।

समाधान:
नानाजी ने माथा छूकर, पेट देखकर और नब्ज देखकर बीमारी का अनुमान लगाया।
उन्होंने बच्चे को कड़वी पुड़िया और काढ़े जैसी चाय दी।
पूरे दिन खाना न देने का निर्णय किया — 'तबियत ढीली हो तो सबसे अच्छा उपाय है भूखे रहना।'
शाम को देखने का वादा किया।

परिणाम:
नानाजी-नानीजी ने अपने हिसाब से सही किया — बच्चे की बीमारी (जो असली नहीं थी) 'ठीक' हो गई।

उत्तर: नानाजी-नानीजी की समस्या — पोते की बीमारी; समाधान — कड़वी पुड़िया, काढ़ा, दिनभर उपवास और आराम।

प्रश्नावली 5.8 — शब्द से जुड़े शब्द

प्रश्न 1

'बीमार' से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए। (शब्द-मानचित्र में 'काढ़ा' एक उदाहरण के रूप में दिया गया है।)

हल

पाठ में 'बीमार' से जुड़े शब्द:

1. काढ़ा — बीमारी में दी जाने वाली जड़ी-बूटियों से बनी दवाई।
2. पुड़िया — बीमारी में दी जाने वाली दवाई की पुड़िया।
3. थर्मामीटर — बुखार नापने का यंत्र।
4. नर्स — अस्पताल में मरीज की देखभाल करने वाली।
5. वार्ड — अस्पताल का वह कमरा जहाँ मरीज लेटते हैं।
6. अस्पताल — बीमारों के इलाज की जगह।
7. साबूदाने की खीर — बीमारी में दिया जाने वाला हल्का भोजन।
8. बुखार — बीमारी का एक लक्षण।
9. आराम — बीमारी में करने की सलाह।
10. दवाई — बीमारी ठीक करने के लिए।

उत्तर: बीमार से जुड़े शब्द: काढ़ा, पुड़िया, थर्मामीटर, नर्स, वार्ड, अस्पताल, साबूदाने की खीर, बुखार, आराम, दवाई।

प्रश्नावली 5.9 — खोजबीन — वाक्य ढूँढिए

प्रश्न 1

कहानी में से वे वाक्य ढूँढकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि — (क) कहानी में सर्दी के मौसम की घटनाएं बताई गई हैं।

हल

सर्दी के मौसम का संकेत देने वाले वाक्य:

1. 'मैं रजाई से निकला ही नहीं।' — सर्दी में रजाई ओढ़ी जाती है।
2. 'मैं रजाई में पड़ा-पड़ा घर में चल रही गतिविधियों का अनुमान लगाता रहा।' — रजाई में लेटना सर्दी की निशानी है।
3. 'नानीजी उठाने आईं तो मैंने कहा...' — सर्दी में रजाई से उठने में आलस होता है।
4. 'और लाल कंबल' — अस्पताल के बिस्तरों पर लाल कंबल भी सर्दी का संकेत है।
5. बच्चे की माँ ने साबूदाने की खीर बनाई — खीर सर्दी में भी खाई जाती है।

उत्तर: 'मैं रजाई से निकला ही नहीं', 'मैं रजाई में पड़ा-पड़ा...' — ये वाक्य सर्दी के मौसम का संकेत देते हैं।

प्रश्न 2

कहानी में से वे वाक्य ढूँढकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि — (ख) बच्चे को बहाना बनाने के परिणाम का आभास हो गया।

हल

बहाने के परिणाम का आभास देने वाले वाक्य:

1. 'न चाहते हुए भी मुझे कड़वी पुड़िया खानी पड़ी और काढ़े जैसी चाय पीनी पड़ी।'
2. 'फल या साबूदाने की खीर मिलने की उम्मीद की तो सुबह ही हत्या हो चुकी थी।'
3. 'क्या मुसीबत है! पड़े रहो! आखिर कब तक कोई पड़ा रह सकता है? इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता।'
4. 'उस पूरे दिन मुझे भूखे पेट ही रहना पड़ा।' — यह सबसे स्पष्ट परिणाम है।

उत्तर: 'न चाहते हुए भी मुझे कड़वी पुड़िया खानी पड़ी', 'इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता', 'उस पूरे दिन मुझे भूखे पेट ही रहना पड़ा' — ये वाक्य परिणाम का आभास दिखाते हैं।

प्रश्न 3

कहानी में से वे वाक्य ढूँढकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि — (ग) बच्चे को खाना-पीना बहुत प्रिय है।

हल

बच्चे का खाने के प्रति प्रेम दर्शाने वाले वाक्य:

1. 'काश! सुधाकर काका की जगह मैं होता! मैं कब बीमार पड़ूँगा!' — साबूदाने की खीर के लिए बीमार होने की इच्छा।

2. 'कितना मजा आता जब रिसेस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।'
3. 'भूख के कारण ठीक से नींद भी नहीं आ रही थी। और आँख जरा लगती भी तो खाने ही खाने की चीजें दिखाई देतीं। गरमागरम खस्ता कचौड़ी... मावे की बर्फी... बेसन की चिक्की... गोलगप्पे।'
4. 'मैं जलन, गुस्से और कुढ़न में पाँव पटकता वापस बिस्तर में आ गया।' — मुन्नू को आम खाते देखकर।

उत्तर: 'काश मैं बीमार होता' (खीर के लिए), 'नमक-मिर्च वाले अमरूद खाते', 'खाने ही खाने की चीजें दिखाई देतीं — गरमागरम खस्ता कचौड़ी, मावे की बर्फी' — ये वाक्य बच्चे का खाने-प्रेम दिखाते हैं।

प्रश्न 4

कहानी में से वे वाक्य ढूँढकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि — (घ) बच्चे को स्कूल जाना अच्छा लगता है।

हल

बच्चे को स्कूल अच्छा लगता है — यह दर्शाने वाले वाक्य:

1. 'कितना मजा आता जब रिसेस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।' — स्कूल की रिसेस याद करना दिखाता है कि स्कूल में मजा आता था।
2. 'इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता। सजा मिलती तो मिल जाती।' — घर में ऊबने से बेहतर स्कूल की सजा भी लगी।
3. 'इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए मैंने बीमारी का बहाना कभी नहीं बनाया।' — इससे पता चलता है कि अनुभव से उसे स्कूल की अहमियत समझ आ गई।
4. कुछ इधर-उधर की, स्कूल की, दोस्तों की बातें सोचता रहा — स्कूल और दोस्तों की याद करना भी इसी का संकेत है।

उत्तर: 'रिसेस में ठेले पर अमरूद', 'स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता', 'स्कूल की, दोस्तों की बातें सोचता रहा' — ये वाक्य बताते हैं कि बच्चे को स्कूल अच्छा लगता है।

प्रश्नावली 5.10 — चेहरों पर मुस्कान, मुँह में पानी

प्रश्न 1

(क) इस कहानी में अनेक रोचक घटनाएं हैं जिन्हें पढ़कर चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। इस कहानी में किन बातों को पढ़कर आपके चेहरे पर भी मुस्कान आ गई थी? उन्हें रेखांकित कीजिए।

हल

निम्नलिखित प्रसंग पढ़कर चेहरे पर मुस्कान आती है:

1. 'क्या ठाठ हैं बीमारों के भी। मैंने सोचा... ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो! काश! सुधाकर काका की जगह मैं होता!' — बच्चे का बीमार होने की चाहत करना।
2. 'मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिल्कुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।' — बीमारी को जान-बूझकर अपनाने का निर्णय।
3. 'बुखार तो नहीं है।' नानाजी बोले। 'आपको पता नहीं चल रहा। थर्मामीटर लगाकर देखिए।' — थर्मामीटर न मिलने पर बच्चे की चालाकी।
4. 'अब छोटे मामा नहाकर निकले। अब कुसुम मौसी... अब मुन्नू अपना जूता ढूँढ़ रहा है।' — रजाई में लेटकर सबका अनुमान लगाना।
5. दबे पाँव दरवाजे तक जाकर झाँकना और मुन्नू को आम चूसते देखकर पाँव पटकते वापस आना।

उत्तर: मुस्कान लाने वाले प्रसंग: 'चलो बीमार पड़ जाते हैं', थर्मामीटर न मिलना और बच्चे की चालाकी, रजाई में सबका अनुमान लगाना, और मुन्नू को आम चूसते देख पाँव पटककर लौटना।

प्रश्न 2

(ख) इस कहानी में किन वाक्यों को पढ़कर आपके मुँह में पानी आ गया था? उन्हें रेखांकित कीजिए।

हल

निम्नलिखित वाक्य पढ़कर मुँह में पानी आता है:

1. 'काका ने बहुत स्वाद लेकर खीर खाई।' — साबूदाने की खीर का स्वादपूर्ण वर्णन।
2. 'कितना मजा आता जब रिसेस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।' — नमक-मिर्च वाले अमरूद का वर्णन।
3. 'गरमागरम खस्ता कचौड़ी... मावे की बर्फी... बेसन की चिक्की... गोलगप्पे। और सबसे ऊपर साबूदाने की खीर!' — भूखे बच्चे के सपनों में आने वाले स्वादिष्ट व्यंजन।
4. 'अरहर की दाल में हींग-जीरे का बघार और ऊपर से बारीक कटा हरा धनिया और आधा चम्मच देसी घी।' — दाल का स्वादिष्ट वर्णन।
5. 'मुन्नू आम चूस रहा था। आम! इस मौसम में!' — मौसम से बाहर का आम देखकर।

उत्तर: मुँह में पानी लाने वाले वाक्य: 'गरमागरम खस्ता कचौड़ी... मावे की बर्फी... गोलगप्पे', 'नमक मिर्च लगे अमरूद', 'अरहर की दाल में हींग-जीरे का बघार', 'मुन्नू आम चूस रहा था।'

प्रश्नावली 5.11 — लेखन के अनोखे तरीके

प्रश्न 1

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। कहानी में ढूँढिए कि इन बातों को कैसे लिखा गया है: 1. ऐसा लगा मानो हमें देखकर सुधाकर काका खुश हो गए। 2. खिड़कियाँ बहुत बड़ी थीं और उनके बाहर हरे पेड़ हवा से हिल रहे थे। 3. वहाँ केवल लोगों के फुसफुसाने की आवाजें आ रही थीं। 4. फुसफुसाने की आवाजों के सिवा वहाँ कोई आवाज नहीं थी। 5. बीमार लोगों के बहुत मजे होते हैं। 6. मैं झूठमूठ बीमार पड़ जाता हूँ।

हल

1. साधारण: 'ऐसा लगा मानो हमें देखकर सुधाकर काका खुश हो गए।'
   कहानी में: 'हमें देखकर सुधाकर काका जैसे खुश हो गए।'

2. साधारण: 'खिड़कियाँ बहुत बड़ी थीं और उनके बाहर हरे पेड़ हवा से हिल रहे थे।'
   कहानी में: 'बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे।'

3. साधारण: 'वहाँ केवल लोगों के फुसफुसाने की आवाजें आ रही थीं।'
   कहानी में: 'सिर्फ लोगों के धीरे-धीरे बातचीत करने की धीमी-धीमी गुनगुन।'

4. साधारण: 'फुसफुसाने की आवाजों के सिवा वहाँ कोई आवाज नहीं थी।'
   कहानी में: 'बाकी एकदम शांति।'

5. साधारण: 'बीमार लोगों के बहुत मजे होते हैं।'
   कहानी में: 'क्या ठाठ हैं बीमारों के भी।'

6. साधारण: 'मैं झूठमूठ बीमार पड़ जाता हूँ।'
   कहानी में: 'चलो बीमार पड़ जाते हैं।'

उत्तर: 1→'जैसे खुश हो गए'; 2→'बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे'; 3→'धीमी-धीमी गुनगुन'; 4→'बाकी एकदम शांति'; 5→'क्या ठाठ हैं बीमारों के भी'; 6→'चलो बीमार पड़ जाते हैं।'